मोहनजोदड़ो की 'नर्तकी': कांस्य कला और ऐतिहासिक प्रमाण की सीमा

प्राचीन इतिहास, कला और सांस्कृतिक शिक्षा (मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-I) | समाचार संदर्भ: जून 2026 (पाठ्यपुस्तक के चित्र पर विवाद, 16-17 जून मूल चित्र लौटाने की घोषणा) | प्रकाशित: 24 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

जून 2026 में कक्षा 9 की कला-पाठ्यपुस्तक में मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध कांस्य प्रतिमा 'डांसिंग गर्ल' के बदले हुए चित्र पर विवाद हुआ। रिपोर्टों के अनुसार चित्र में प्रतिमा के ऊपरी धड़ पर गहरी छाया डाली गई थी।

इसके बाद 16-17 जून की रिपोर्टों में मूल रूप वाला चित्र डिजिटल और आगामी मुद्रित संस्करणों में वापस लाने के निर्णय की सूचना दी गई। इसलिए इस खबर को केवल बदलाव पर रोककर नहीं पढ़ना चाहिए। बाद की घोषणा भी समाचार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ वर्तमान डिजिटल पृष्ठ का स्वतंत्र दृश्य सत्यापन करने का दावा नहीं किया गया है।

यह प्रतिमा कौन-सी है?

'डांसिंग गर्ल' या 'नर्तकी' हड़प्पा सभ्यता की एक छोटी कांस्य मानव-आकृति है। राष्ट्रीय संग्रहालय के विवरण के अनुसार यह मोहनजोदड़ो से मिली थी और संग्रहालय की सिंधु सभ्यता दीर्घा में प्रदर्शित है।

मोहनजोदड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में है। पुरास्थल का स्थान और किसी वस्तु का आज का संग्रहालय अलग बातें हैं। किसी वस्तु के समाचार में आने पर उसकी प्राप्ति-स्थली, माध्यम और ऐतिहासिक संदर्भ को अलग पहचानना परीक्षा के लिए उपयोगी है।

क्या वह वास्तव में नर्तकी थी?

प्रतिमा को 'नर्तकी' नाम से जाना जाता है, लेकिन यह नाम उस व्यक्ति के वास्तविक पेशे का लिखित प्रमाण नहीं है। उसकी मुद्रा और कलात्मक प्रभाव के आधार पर व्याख्याएँ की जाती हैं।

पुरातात्त्विक वस्तु के बारे में तीन बातें अलग रखें: वस्तु में सीधे क्या दिखता है, वह किस संदर्भ में मिली और उसके अर्थ की व्याख्या क्या है। आभूषण या आत्मविश्वास वाली मुद्रा दिखने से उस समाज की हर स्त्री की स्थिति पर निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

PCSMANTRA.COM

कांस्य क्यों महत्वपूर्ण है?

कांस्य एक ताँबा-आधारित मिश्रधातु है। हड़प्पा सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता कहा जाता है क्योंकि वहाँ ताँबा-आधारित मिश्रधातुओं से बनी अनेक वस्तुएँ मिली हैं।

इस प्रतिमा का महत्व केवल सुंदर मुद्रा में नहीं है। धातु ढालने का कौशल, आकार की योजना और सूक्ष्म विवरण बनाने की क्षमता तकनीकी ज्ञान की ओर भी संकेत करते हैं। कला और तकनीक का इतिहास यहाँ एक-दूसरे से जुड़ता है।

मोम-क्षय ढलाई की तकनीक:

राष्ट्रीय संग्रहालय और NCERT के कला-विवरण इस प्रतिमा को 'लॉस्ट वैक्स' या मोम-क्षय ढलाई की तकनीक से जोड़ते हैं। इस प्रक्रिया में पहले मोम का इच्छित आकार बनाया जाता है। उसके ऊपर मिट्टी का आवरण बनाकर सूखने दिया जाता है।

गर्म करने पर मोम पिघलकर निकल जाता है और भीतर खाली जगह बचती है। उसमें पिघली धातु डाली जाती है। धातु ठंडी होने के बाद मिट्टी का आवरण हटाकर आकृति निकाली जाती है। यह प्रक्रिया का सरल परिचय है, वास्तविक प्राचीन कार्यशाला के हर चरण का प्रत्यक्ष अभिलेख नहीं।

ढलाई और तराशने में अंतर:

ढलाई में तरल धातु साँचे का आकार लेती है। इसके विपरीत पत्थर तराशने में ठोस सामग्री को काटकर या हटाकर आकृति बनाई जाती है। दोनों में कलाकार की योजना और कौशल चाहिए, लेकिन तकनीकी प्रक्रिया अलग है।

इसलिए हड़प्पा की हर मूर्ति को एक ही माध्यम या तकनीक से बनी नहीं मानना चाहिए। कांस्य, पकी मिट्टी और पत्थर की वस्तुएँ अलग स्रोत-सामग्री तथा निर्माण प्रक्रियाएँ दिखाती हैं।

आभूषण और शरीर की मुद्रा:

प्रतिमा में एक हाथ कमर पर, सिर के पीछे केश-विन्यास और हाथों में कड़े जैसे विवरण दिखाई देते हैं। ये शरीर, सज्जा और दृश्य अभिव्यक्ति के प्रति कलाकार की रुचि समझने में मदद करते हैं।

लेकिन एक छोटी प्रतिमा समाज का पूर्ण सांख्यिकीय चित्र नहीं है। उससे हर व्यक्ति का पहनावा, किसी खास नृत्य-शैली या सभी सामाजिक संबंधों का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। प्रमाण की सीमा पहचानना अच्छे इतिहास-लेखन का हिस्सा है।

चित्र बदलने से अध्ययन पर असर:

पाठ्यपुस्तक में किसी पुरावस्तु का चित्र ऐतिहासिक प्रमाण को समझाने का साधन होता है। यदि चित्र में बदलाव से वस्तु के मूल रूप का अलग प्रभाव बने तो विद्यार्थी प्रमाण और व्याख्या को अलग पहचानने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं।

रंग, छाया या पुनर्निर्माण का उपयोग अपने आप गलत नहीं है। लेकिन क्या मूल वस्तु है, क्या आधुनिक चित्रण है और कहाँ संपादन हुआ है, यह स्पष्ट होना चाहिए। कला-शिक्षा में संदर्भ और सही विवरण, केवल सजावटी चित्र से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

POSMANTRA.COM

मूल वस्तु, प्रतिकृति और चित्र:

मूल पुरावस्तु: पुरातात्त्विक संदर्भ से प्राप्त वास्तविक वस्तु।

प्रतिकृति: शिक्षण, स्पर्श-अनुभव या प्रदर्शन के लिए बनाया गया उसका आधुनिक रूप।

चित्र: वस्तु का फोटो या कलात्मक निरूपण, जिसमें कोण, प्रकाश और संपादन असर डाल सकते हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय की स्पर्श-अनुभव दीर्घा का विवरण स्वयं प्रतिकृति और मूल प्रतिमा को अलग करता है। इसलिए किसी प्रतिकृति की तस्वीर को मूल पुरावस्तु का बिना भेद वाला प्रमाण नहीं बना देना चाहिए।

ऐतिहासिक प्रमाण कैसे पढ़ें?

पहले पुरास्थल और माध्यम पहचानें। फिर देखें कि विवरण संग्रहालय, उत्खनन रिपोर्ट या बाद की व्याख्या में से किस स्रोत से आया है। माप और तिथि जैसे विवरणों में स्रोतों का अंतर हो तो अनावश्यक सटीकता न जोड़ें।

इसके बाद वस्तु से निकलने वाले सीमित निष्कर्ष लिखें। 'धातुकर्म का कौशल' जैसे निष्कर्ष और 'ठीक यही पेशा या सामाजिक दर्जा' जैसे दावे समान प्रमाण नहीं माँगते। वस्तु का प्रचलित नाम उपयोगी हो सकता है, लेकिन नाम को ऐतिहासिक पहचान का अंतिम प्रमाण नहीं बनाना चाहिए।

परीक्षा के लिए महत्व:

यह विषय हड़प्पा कला को केवल प्रमुख स्थलों की सूची से आगे समझने का अवसर है। इससे कांस्ययुग, धातु ढलाई, पुरावस्तु और संग्रहालय, चित्र की प्रामाणिकता तथा इतिहास की व्याख्या जैसे विषय जोड़े जा सकते हैं।

जून की घटना का नीतिगत पक्ष शिक्षा में सटीक प्रस्तुति और संशोधन के प्रति जवाबदेही है। असहमति की चर्चा करते समय संस्था की घोषित सुधार-प्रक्रिया को भी शामिल करना चाहिए। किसी एक चित्र से पूरी पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता पर बिना समीक्षा अंतिम निर्णय देना उचित नहीं है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास:

प्रश्न: पुरातात्त्विक कला-वस्तुओं के अध्ययन में मूल प्रमाण, दृश्य प्रस्तुति और ऐतिहासिक व्याख्या को अलग रखना क्यों जरूरी है? हड़प्पा कला के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

परिचय: पुरातात्त्विक कला-वस्तुएँ तकनीक, सौंदर्य-बोध और सामाजिक जीवन की जानकारी देती हैं, लेकिन उनका अर्थ सावधानी से समझना पड़ता है।

मुख्य भाग: मोहनजोदड़ो की कांस्य 'नर्तकी' धातु ढलाई और सूक्ष्म कलात्मक योजना का प्रमाण है। उसकी मुद्रा तथा आभूषण दृश्य विवरण हैं, जबकि वास्तविक पेशे और सामाजिक दर्जे के निष्कर्ष व्याख्या हैं। प्रचलित नाम को लिखित पहचान नहीं माना जा सकता। मूल वस्तु, आधुनिक प्रतिकृति और संपादित चित्र अलग स्रोत हैं। पाठ्यपुस्तक में बदलाव से वस्तु का रूप अलग लगे तो विद्यार्थी प्रमाण को गलत समझ सकते हैं। इसलिए माध्यम, प्राप्ति-स्थल, स्रोत और संपादन की जानकारी स्पष्ट होनी चाहिए।

निष्कर्ष: प्रमाण और व्याख्या का भेद इतिहास को कमजोर नहीं करता; वह निष्कर्षों को अधिक सटीक और भरोसेमंद बनाता है।

PCSMANTRA.COM

स्रोत और सीमाएँ

- इसी विषय का प्रारंभिक परीक्षा (तथ्य) लेख: मोहनजोदड़ो की 'नर्तकी' — प्रमुख तथ्य
- राष्ट्रीय संग्रहालय (अनुभव स्पर्श-दीर्घा पृष्ठ): मूल प्रतिमा, प्रतिकृति और मोम-क्षय ढलाई का विवरण (पढ़ा): https://nationalmuseumindia.gov.in/en/anubhav-a-tactile-experience
- राष्ट्रीय संग्रहालय: हड़प्पा सभ्यता दीर्घा और प्रतिमा की प्रदर्शन-स्थिति (पढ़ा): https://nationalmuseumindia.gov.in/en/harappan-civilization
- NCERT कला-पाठ्यपुस्तक अध्याय: हड़प्पा कला और कांस्य ढलाई की चर्चा (पढ़ा): https://ncert.nic.in/textbook/pdf/kefa102.pdf
- BBC 16 जून: चित्र बदलने और मूल रूप लौटाने की रिपोर्ट (पढ़ी): https://www.bbc.com/news/articles/c7vyzgl2142o
- इंडियन एक्सप्रेस 16-17 जून: सुधार के निर्णय पर रिपोर्ट (पढ़ी): https://indianexpress.com/article/education/express-impact-ncert-to-restore-nude-dancing-girl-image-in-class-9-arts-textbook-10741414/
- **सीमाएँ:** वर्तमान कक्षा 9 पाठ्यपुस्तक के डिजिटल पृष्ठ का स्वतंत्र दृश्य सत्यापन नहीं किया गया; मूल चित्र लौटाना घोषित निर्णय के रूप में रिपोर्टेड है, पूरा हुआ संपादन के रूप में नहीं। संग्रहालय-स्रोतों में प्रतिमा की ऊँचाई के माप में अंतर है, इसलिए आकार का आँकड़ा नहीं दिया गया। प्रतिमा से वास्तविक पेशा, सामाजिक दर्जा या नस्ल पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला गया; पुराने नस्लीय वर्गीकरण वाले दावे शामिल नहीं किए गए। मूल वस्तु की कोई बाहरी तस्वीर बदलकर इस्तेमाल नहीं की गई है।

PCSMANTRA.COM